शोध मंथन Vol. XV No.II Apr.-June 2024 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Available at: *http:/shodhmanthan.anubooks.com*

संथाल परगना के आंदोलनकारियों पर महात्मा गांधी के विचारों का प्रभाव

प्राप्तिः 22.05.2024
स्वीकृतः 10.06.2024

43

रामानन्द कुमार पासवान
शोधार्थी
चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय,मेरठ
ईमेलः *ramanandbed@gmail.com*

प्रो0 वकुल रस्तोगी
शोध–निर्देशक
मेरठ कॉलिज, मेरठ

सारांश

महात्मा गांधी के विचारों से संथाल परगना और इस प्रक्षेत्र के आंदोलनकारी प्रभावित हुए बिना नहीं रह सके। हालांकि गांधीजी जब 26 अप्रैल, 1925 को देवघर अंतर्गत जसीडिह स्टेशन पर उतरे तब सनातनियों ने उनका विरोध किया व उनकी गाड़ी का शीशा तोड़ दिया। किन्तु वे गाड़ी से उतर गए व सनातियों के बीच से होकर लगभग एक मील पैदल चले। गांधीजी ने विरोध प्रदर्शन के तरीके पर दुःख प्रकट किया। 1921–22 में लोगों ने जो घोर कष्ट सहे थे उसकी सूचना विस्तार से गांधी जी को मिली। गांधीजी ने उपस्थित श्रोताओं को ''संथालों के मध्य नशाखोरी का त्याग करने और व्यवस्थित ढंग से चरखा का प्रचार करने की सलाह दी।''[1] देवघर से गांधीजी खड़गडिहा गए। यहां देश बन्धु स्मारिक अधिकोष के लिए महिलाओं की एक सभा में उन्हें नकद एवं आभूषणों के रूप में पर्याप्त रकम मिली। यहां माथुरी समुदाय के लोग गांधीजी से काफी प्रभावित हुए व मांस–मदिरा का परित्याग कर दिए। संथाल लोग भी इस इलाके में इनसे काफी प्रभावित हुए और इस समुदाय में कई सुधार हुए। इसके बाद गांधीजी मधुपुर पहुंचे यहां गांधी जी को सर्वाधिक आदर एवं समर्थन मिला। इसके बाद गांधीजी के सत्याग्रह एवं अहिंसा के विचार संथाल परगना में तेजी से फैलना शुरू हुआ। गांधीजी के इन विचारों से कई आंदोलनकारी प्रभावित हुए और वे सत्याग्रही हो गए जिनमें पं0 बिनोदानन्द झा द्वारिका प्रसाद मिश्र, मेशा पहाड़िया जबरा पहाड़िया, पंडरा पहाड़िया सुंदर पहाड़िया, प्रफुल्ल चंद्र पटनायक, श्री कृष्ण प्रसाद के गोपालन, श्याम टुडडू, गांदेमाल, पहाड़िया, डोमनलाल पहाड़िया आदि प्रमुख थे।

मुख्य बिन्दू

सत्याग्रह, रामूडीह गांधी आश्रम, जसीडिह, राजमहल, तिलक फंड, पहाड़िया, त्रिगुनानन्द खवाड़े, तोपखाना, घोरमारा।

संथाल परगना झारखण्ड राज्य अन्तर्गत संथाल जनजाति बाहुल प्रक्षेत्र है। इसी जनजाति की बाहुलता के कारण इस प्रक्षेत्र को आज संथाल परगना कहा जाता है किन्तु संथाल परगना के मूल निवासी पहाडिया हैं। अंग्रेजी सरकार ने 1770 के बाद संथालों को राजमहल प्रक्षेत्र में बसाना शुरू किया तथा इन्हें पहाड़िया के विरूद्ध उपयोग किया। पहाड़िया समुदाय को संथालों से संधर्ष के कारण बहुत क्षति उठानी पड़ी। इसके बावजूद भी राष्ट्रीय आन्दोलन के मंच पर इन दोनों समुदायों ने अपनी भूमिका का निर्वहन किया साथ ही यहाँ के सदानों ने भी राष्ट्रीय आन्दोलन में योगदान दिया।[3]

प्रारंभिक दौर में संथाल परगना के क्रांतिकारी बंगाल के क्रांतिकारी नेताओं से प्रभावित थे विशेषकर अरविन्द घोष, बारीन्द्र घोष, राजनारायण बोस इत्यादि उनसे ज्यादा प्रभावित थे। सखाराम गणेश देउस्कर जो संथाल परगना के ही थे इनकी कृति 'देशेर कथा' से भी संथाल परगना के जनमानस काफी प्रभावित हुए। 1905 में आरंभ स्वदेशी एवं बहिष्कार आंदोलन में बारीन्द घोष के 'युगांतर' एवं पं0 सखाराम गणेश देउस्कर के 'देशेर कथा' ने प्रमुख भूमिका निभाई।[4]

किन्तु भारतीय राजनीति के मंच पर महात्मा गांधी के आगमन ने राष्ट्रीय आन्दोलन के स्वरूप को ही बदल दिया। 1915 में भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में गांधी जी का आगमन हुआ इसी के साथ स्वतंत्रता संग्राम का तीसरा चरण शुरू हुआ जिसे गांधीवादी आन्दोलन या गांधी युग कहा जाता है। संथाल परगना की धरती पर गांधीजी के चरण 1925 में पड़े जब वे 25 अप्रैल को बक्सर से चलकर 26 अप्रैल, 1925 को देवघर के जसीडिह स्टेशन पहुँचे। यहां कुछ सनातनियों ने महात्मा गांध ी का विरोध किया व उनकी गाड़ी का पिछला शीशा तोड़ दिया। गांधीजी इसके बाद गाड़ी से उतर गए तथा डेढ़ किमी तक उन्हीं सनातनियों के बीच होकर पैदल चले। देवघर में विरोध प्रदर्शन हुए गांधीजी ने इन विरोध प्रदर्शनों पर खेद प्रकट किया।[5] किन्तु इसके बावजूद भी गांधीजी से लोग प्रभावित हुए बिना नहीं रह सके। महात्मा गांधीजी के जिन विचारों का प्रभाव संथाल परगना के आंदोलनकारियों पर सर्वाधिक रूप में पड़ा वह था सत्याग्रह एवं अहिंसा का विचार।

संथाल परगना में आरम्भ से ही असहयोग का विचार दिखाई देने लगा था भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस से जुड़े गबई गोधरा पहाड़िया की हत्या के बाद पहाड़िया समुदाय गोपालकृष्ण गोखले एवं बालगंगाधर तिलक के आह्वान पर राष्ट्रीय आन्दोलन में खुद को समर्पित कर दिया था किन्तु 1920 के बाद पहाड़िया समुदाय के लोगों ने महात्माा गांधी के आह्वान पर स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।[6] असहयोग आन्दोलन के दौरान जामताडा हाईस्कूल के विद्यार्थियों ने 31 जनवरी, 1921 के दिन स्कूल का बहिष्कार कर दिया देवघर हाईस्कूल के छात्रों ने राष्ट्रीय स्कूल की स्थापना की मांग की। जिला भर में नशीले पदार्थों की बिक्री पर भारी प्रभाव पड़ा। एक असहयोगी नेता दर्शनानन्द 26 फरवरी को जामताड़ा आया और उन्होंने लोगों से नशीले पदार्थों का सेवन नहीं करने की अपील की ये गांधीजी के विचारों से काफी प्रभावित थे गांधीजी जब मधुपुर गए तब श्री नथमल

खंडेलवाल, श्री राधाकृष्ण प्रसाद आदि उनसे काफी प्रभावित हुए। इन युवा आंदोलनकारियों ने 'तिलक फंड' के लिए चंदा संग्रह किया व हरनन्द राय गुटगुटिया ने महात्मा गांधी को थैली भेंट की। इसके साथ ही देवघर दुमका, गोड्डा, जामताड़ा, मधुपुर के जनमानस गांधीजी के विचारों से 'काफी प्रभावित हुए तथा उन्होंने संगठित होकर अंग्रेजी शासन के प्रति असहयोग किया।[7]

नमक सत्याग्रह एवं सविनय अवज्ञा से जुड़े संथाल परगना के आन्दोलनकारियों में गांधीजी के विचार और भी प्रखर रूप में दिखाई पड़ते है। 1930–31 के 'नमक सत्याग्रह' में संताल परगना के मधुपुर नामक स्थान में नथमल खंडेलवाल, रामराज जजवाड़े, श्री शिव सागर अवस्थी, श्री उपेन्द्रनाथ झा, श्री द्वारिका प्रसाद गुटगुटिया आदि सत्याग्रह करते पकड़े गए। ये सभी गांधीजी के विचारों से प्रभावित थे। सविनय अवज्ञा आंदोलन के दौरान भी संथाल परगना के स्वतंत्रता सेनानी गांधीजी के साथ खड़े हो लिए। श्री शशिभूषण राय, पं0 विनोदानन्द झा, पं0 शिवराम झा, श्री इन्द्रनारायण झा, श्री इन्द्रनारायण द्वारी, श्री जागेश्वर शाह, श्री गया बाबू, श्री बटोही जी आदि गिरफ्तार कर लिए गए किन्तु आन्दोलनकारियों के उत्साह कम नहीं हुए क्रांतिकारियों ने रामूडीह गांधी आश्रम को आन्दोलनकारियों क्रांतिकारियों के मेल–मिलाप का बड़ा केन्द्र बना लिया था। रामूडीह गांधी आश्रम महात्मा गांधीजी के सत्याग्रह एवं अहिंसा से प्रभावित जनसमुदायों का केन्द्र था जो वर्तमान देवघर जिले के देवीपुर प्रखण्ड में स्थित था। नमक सत्याग्रह में पंगरो पहाड़ के पंडरा पहाड़िया और चंद्र के सुंदर पहाड़िया ने भी योगदान दिया। गांधीजी से प्रभावित पहाड़िया जनजाति के नमक सत्याग्रह में शामिल होने से ब्रिटिश सरकार बेचैन हो उठी।

इसी बीच सन् 1934 में गांधीजी का संथाल परगना में दूसरी बार आगमन हुआ। इसका कारण रैम्जे मैकडोनॉल्ड का साम्प्रदायिक पंचाट था अतः संथाल परगना में हरिजनों के उद्धार सम्बंधी कार्यक्रम चलाने की परिस्थितियाँ बन चुकी थी।[8] भारत छोड़ो आन्दोलन में भी संथाल परगना के जन–समुदाय गांधीजी के 'अंग्रेजों भारत छोड़ो' और 'करो या मरो' के नारों से उद्वेलित हो उठे। गांधीजी के इस आन्दोलन का व्यापक स्वरूप संथाल परगना की भूमि पर दिखती है। हड़तालों और जुलूसों की झड़ी सी लगी रही देवधर में विनोदानन्द झा इस आन्दोलन का नेतष्त्व कर रहे थे जिसे पुलिस ने भंग कर दिया। किन्तु आन्दोलन की लहर जनमानस में व्यापक रूप से फैल चुका था ग्रामीण इलाकों में काफी प्रदर्शन व तोड़–फोड़ किए गए। लोग गांधी जी के विचार को अच्छी तरह समझ गए थे कि अंग्रेजों को भारत से निष्काषित करना है तो बैठे रहने से कुछ नहीं होगा, बल्कि कुछ करना होगा इसमें हड़ताल, जुलूस, तोड़–फोड़ डाक, रेलवे आदि को बाधित करने आदि कार्यवाहियों को अंजाम दिया गया।[9]

गोड्डा कचहरी में 13 अगस्त को राष्ट्रीय ध्वज फहरा दिया गया। 13–14 अगस्त, 1942 को रेल की पटरियों सिग्नलों, तार एवं टेलीफोन लाइनों को नष्ट किया गया। मधुपुर, जसीडिह, रोहिणी, शंकरपुर के रेल पटरियों को नुकसान पहुंचाया गया। मधुपुर जसीडिह, देवघर के सरकारी भवनों को क्षति पहुंचाई गई। हालात इतनी बिगड़ गई कि मधुपुर गोड्डा राजमहल और जामताड़ा में फौज भेजी गई। एक विशेष फौजी टुकड़ी दुमका पहुंची इसमें तोपखाना भी था। इस गोलीबारी में त्रिगुनानन्द खवाड़े मारे गए। विनोदानन्द झा, गौरी शंकर डालमिया और छविलाल झा को गिरफ्तार कर लिया गया कईयों को सजा दी गई। इधर पहाड़िया जनजाति के लोग भी महात्मा गांधी और

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के आह्वान पर भारत छोड़ो आन्दोलन में शामिल हो गए। वे प्रफूल्ल चन्द्र पटनायक, श्री कृष्ण प्रसाद शाह और के गोपालन के नेतृत्व में आन्दोलन कर रहे थे। श्री जामा कुमार पहाड़िया, डोमनलाल पहाड़िया आदि कई पहाड़िया वीरों ने इस आन्दोलन में अमूल्य योगदान देकर गांधी जी के विचारों का जनमानस में प्रसार किया।[10]

निष्कर्ष

इस प्रकार संथाल परगना की भूमि पर भारत के स्वतंत्रता संग्राम में सम्मिलित सर्वाधिक स्वतंत्रता सेनानी, लेखक एवं जनमानस गांधी जी के विचारधारा से प्रभावित थे जहां तक 1915 के बाद से स्वतंत्रता प्राप्ति तक की बात हो इस तीसरे चरण के राष्ट्रीय आन्दोलन में गांधीजी के सत्याग्रह एवं अहिंसा के विचार संथाल परगना के आन्दोलनकारियों में व्यापक रूप से छाया रहा हालांकि क्रांतिकारियों का एक वर्ग सुभाषचंद्र बोस एवं उनके फॉरवर्ड ब्लॉक से प्रभावित थे श्री भूवनेश्वर पाण्डेय इस विचारधारा के बड़े ही लोकप्रिय स्वतंत्रता सेनानी थे जो संथाल परगना के रोहिणी नामक क्षेत्र से सम्बन्धित थे किन्तु 1942 की अगस्त क्रांति के शुरू होने के बाद संथाल परना के अधिकांश क्षेत्रों में अंग्रेजों के विरूद्ध जनसमुदाय संगठित होकर विरोध पर उतर आये और इस संगठन में गांधीजी के 'अंग्रेजो भारत छोड़ो' एवं 'करो या मरो' के नारों ने अहम भूमिका निभाई। देवघर जिले के घोरमारा गाँव के मंडल समुदाय की भूमिका भारत छोड़ो आन्दोलन में अविश्मरणीय है जो गिरफ्तार किए गए और बहुत सारे कैदियों की कैद में ही मृत्यु हो गई। राजमहल क्षेत्र में भी इस आंदोलन के दौरान कई संथाल लोग गिरफ्तार हुए जिन्हें राजमहल जेल में रखा गया। जिनमें प्रमुख थे जयराम मूर्मू, रघु मुर्मू, रामू मराण्डी।[12] ये गांधी जी के सत्याग्रह, अहिंसा एवं अनशन में विश्वास रखते थे। किन्तु 'करो या मरो' के नारे के बाद इनमें उग्र आन्दोलन की भावना आ गई। अर्थात् यह कहना उचित होगा कि संथाल परगना में राष्ट्रीय आन्दोलन का इतिहास महात्मा गांधी के राजनीतिक विचारों से सर्वाधिक प्रभावित था क्योंकि बहुसंख्यक जनसमुदाय जैसे किसान, मध्यम वर्ग, मजदूर वर्ग आदि गांधीजी के समर्थन में अंग्रेजी सरकार के खिलाफ संगठित होकर आन्दोलन कर रहे थे।

संदर्भ

1. झा, पं० विनोदानन्द. स्मृतिग्रंथ. पृष्ठ 139.
2. केजरीवाल, मोतीलाल. (1849). 42 की क्रांति में संथाल परगना, दुमका. पृष्ठ 37—46.
3. बनर्जी, सुरेन्द्रनाथ. ए नेशन इन मेकिंग. पृष्ठ 228.
4. कुमार, उमेश. वतनपरस्त।
5. झा, पं० विनोदानन्द. स्मृति ग्रंथ।
6. सुरेश्वरनाथ., वर्मा, दिनेश नारायण. पहाड़िया जनजाति का संक्षिप्त इतिहास. पृष्ठ 9—10.
7. झा, बैकुंठ नाथ., कुमार, उमेश. मातृ बंधन मुक्ति संग्राम में संथाल परगना।
8. केजरीवाल, मोतीलाल. (1849). 42 की क्रांति में संथाल परगना, दुमका।
9. वर्मा, दिनेश नारायण. (1989). नवोदय. अक्टूबर. पृष्ठ 10.
10. टुडू, डॉ० कृष्ण चन्द्र. संताली भाषा अन्वेषिका. पृष्ठ 93.